5

ISSN No. : 2395-4000

प्रयाग-पथ

वर्ष : 3, अंक : 5, जुलाई-2017 पूर्णांक : 5

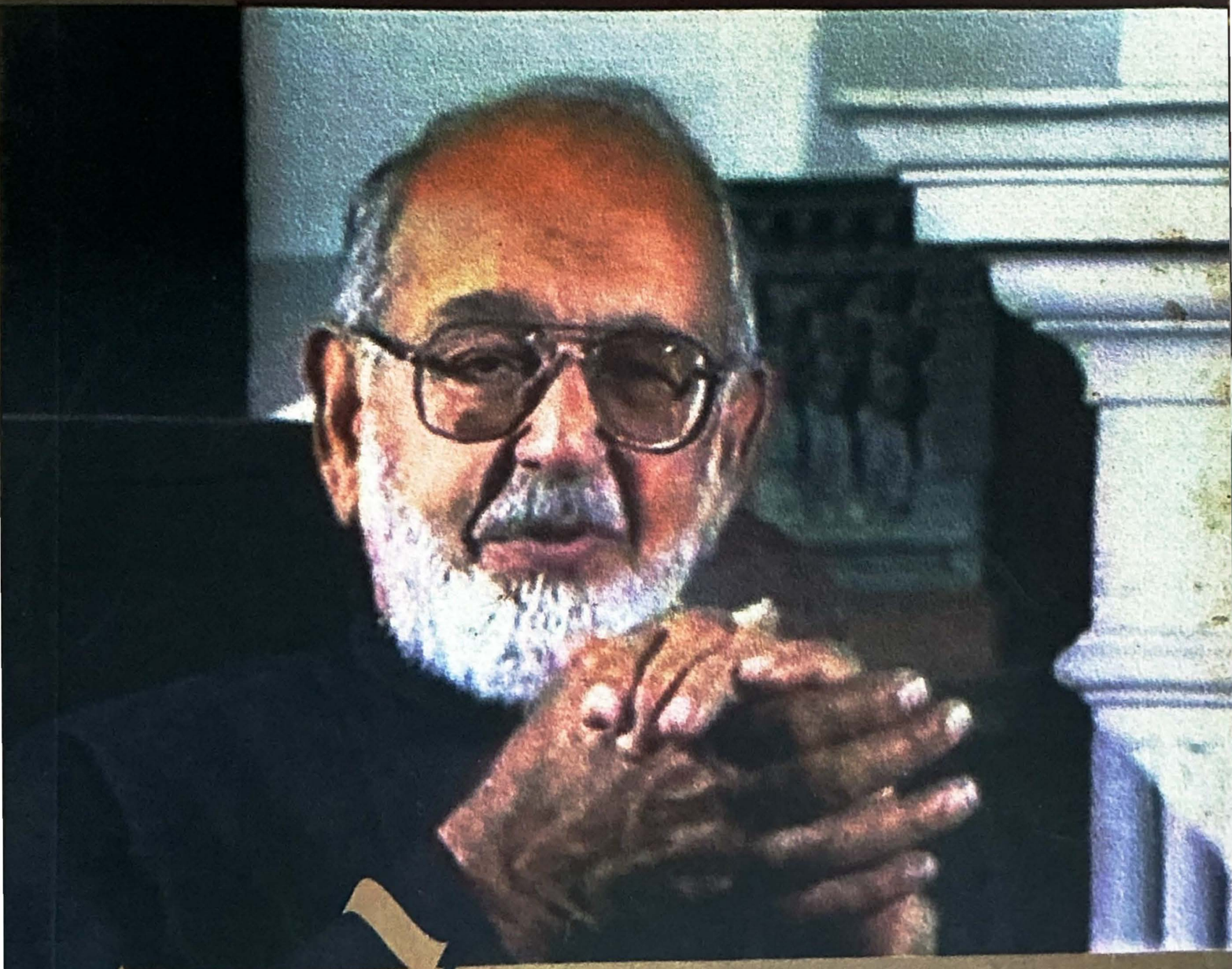

अज्ञेय

अनुपस्थित उपस्थिति के ३० वर्ष

ज्ञेय अज्ञेय

कितनी दुनियाओं में कितनी बार

लौटकर आना मगर फिर-फिर
उसी दुनिया में
बसाया जिसे
नदी के द्वीप-सा

माना कि बहना रेत होना है
मगर
'जितना तुम्हारा सच है, उतना ही कहो' की ज़िद
के सामने
अदेखा रह गया
यह सच
कि नदी के प्रवाह के थपेड़ों से
द्वीप कैसे जाएगा बच?
कुछ न कुछ तो रेत होगा ही,
न बहे तो भी
तो भी
तुम्हारा सच उठा है रच

स्मृति में हो तुम-
गंभीरता साकार...
वह अकेलापन
जिसे तुमने वरा
अकेला करने न पाया तुम्हें...
निजता पा गई विस्तार
(2010)

(राजेन्द्र कुमार)

प्रयाग-पथ

साहित्य, कला और संस्कृति का संचयन

वर्ष : 3, अंक : 5, जुलाई-2017 पूर्णांक : 5

सम्पादक
हितेश कुमार सिंह

सह-सम्पादक
डॉ. नीतू सिंह

लेज़र टाइपसेटिंग
ज़िया कम्प्यूटर्स, 3/11, समीर प्लाजा,
पुराना कटरा, इलाहाबाद

मुद्रक
इण्डियन प्रेस प्रा.लि.,
36, पन्नालाल रोड, इलाहाबाद-211002

आवरण : अशोक सिद्धार्थ

मूल्य
एक प्रति : रु. 50.00 (डाक खर्च अतिरिक्त)
संस्थाओं के लिए : रु. 60.00 (डाक खर्च अतिरिक्त)
सदस्यता चार अंक : 300.00 (डाक खर्च सहित)
आजीवन सदस्यता : पाँच हजार रुपये
संस्थाओं के लिए : दस हजार रुपये

सम्पर्क
1546, किदवई नगर,
अल्लापुर, इलाहाबाद-211006
उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 09452790210
ई-मेल : prayagpathpatrika@gmail.com

सम्पादन, प्रकाशन एवं संचालन पूर्णतः अवैतनिक/अव्यवसायिक
प्रयाग-पथ में प्रकाशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखकों के अपने हैं, सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश होगा।

अनुक्रम

सम्पादक की ओर से : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

अज्ञेय होने का अर्थ

अजित कुमार : अज्ञेय की प्रासंगिकता / 1
गिरिराज किशोर : अज्ञेय क्या 'अज्ञेय' हैं / 3
विजय बहादुर सिंह : शताब्दी वर्ष में अज्ञेय / 6
विष्णु नागर : मैं और अज्ञेय / 12
डॉ. जगदीश्वर चतुर्वेदी : लोकतान्त्रिक अज्ञेय की तलाश में / 17
विनोद शाही : अज्ञेय का 'अ-पूर्वानुमेय' साहित्य चिन्तन / 35
डॉ. राजकुमार : अज्ञेय का काल-चिन्तन / 40
मूलचन्द गौतम : विवादास्पद अज्ञेय / 48
स्वप्निल श्रीवास्तव : अज्ञेय का महत्व / 50

दृष्टि का विवेक

राजेन्द्र कुमार : अज्ञेय की रचना दृष्टि और उसके प्रमुख प्रेरणास्रोत / 56
गोपेश्वर सिंह : तारसप्तक और अज्ञेय / 59
प्रो0 कृष्ण चन्द्र लाल : मानवीय यथार्थ और अर्थवत्ता की खोज से जुड़ी अज्ञेय की कहानियाँ / 63
प्रणय कृष्ण : आभ्यांतर और बाह्य / 70
अरूण कुमार : अज्ञेय साहित्य के वैचारिक और दार्शनिक स्रोत / 77
दिविक रमेश : अज्ञेय की शास्त्रीयता और नई कविता / 87
अजीत प्रियदर्शी : हिन्दी कविता में सप्तकों का महत्व और तत्सम्बन्धी विवाद / 95
पूजा गुप्ता : अज्ञेय का उत्तर काव्य / 100

कविता की धार

प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित : असाध्यवीणा के नाद-बिंब / 111
मनीषा सा : 'बावरा अहेरी' एक पुनर्दृष्टि / 116
बसंत त्रिपाठी : 'दूर्वाचल' विरोध-मूलक अस्तित्व की पहचान / 119
प्रज्ञा : रूढ़ परंपरा और नयी सौंदर्याभिरुचियों की टकराहट (संदर्भ : कलगी बाजरे की) / 122
डॉ. डी.एन. प्रसाद : कितनी नावों में कितनी बार / 127
राजेश मल्ल : यह दीप अकेला / 131
डॉ. मंजू सिंह : नदी के द्वीप / 135

दीपक जायसवाल : अज्ञेय की रचनादृष्टि और जीवन दर्शन
(संदर्भ : असाध्यवीणा) / 140

अनन्य अज्ञेय

सुधीर विद्यार्थी : क्रांतिकारी अज्ञेय / 144
डॉ. धनंजय चोपड़ा : हिन्दी पत्रकारिता और अज्ञेय / 155
प्रभात : फोटोग्राफर अज्ञेय / 159
मिथिलेश : अज्ञेय के निबन्ध भारतीयता की पहचान है / 162
कुमार वीरेन्द्र : पार्श्व गिरि का नम, चीड़ों में,
डगर चढ़ती उमंगों-सी / 175
प्रभाकर सिंह : अज्ञेय : प्रयोगधर्मी आलोचना का सजग विवेक / 186

कहन का अन्दाज़

अर्चना वर्मा : हीलीबोन की बत्तखें / 192
रोहिणी अग्रवाल : गैंग्रीन / 201
श्रीराम त्रिपाठी : 'शरणदाता' : एक पुनरावलोकन / 209
कुमार अम्बुज : नैत्य की उदास परछाईं
(कहानी 'रोज' के संदर्भ में) / 214
नीरज खरे : नाट्य विद्या में 'कविप्रिया' / 217
नीलाभ कुमार : जीवन की उत्कट लालसा
('कोठरी की बात' कहानी के संदर्भ में) / 221

प्रयोग का आख्यान

डॉ. आनन्द कुमार सिंह : 'शेखर : एक जीवनी' दृष्टि और सृष्टि / 224
चन्द्र प्रकाश पाण्डेय : 'अपने-अपने अजनबी' का सहज पाठ / 231

रंग-प्रसंग

सत्यदेव त्रिपाठी : प्रियदर्शी की उत्तर अज्ञेय दृष्टि / 234
जनार्दन : ऐतिहासिक मनोविज्ञान के उतार-चढ़ाव की उत्तर कथा -
उत्तर प्रियदर्शी / 239

सम्पादक की ओर से

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

अज्ञेय आधुनिक हिन्दी साहित्य ही नहीं अपितु सम्पूर्ण आधुनिक भारतीय साहित्य के एक आकर्षक एवं महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। वह हिन्दी कविता के ऐसे गौरव पुरुष हैं जिनकी जड़ें हिन्दी कविता में गहरे तक समाई हुई है। घुमक्कड़ी, विद्या-व्यसन, विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, दर्शनों और जीवन-दृष्टियों को निकट से जानने की उत्सुकता ने अज्ञेय को चिन्तक बना दिया। हिन्दी साहित्य में अज्ञेय को एक कवि के साथ-साथ उपन्यासकार, कहानीकार, आलोचक आदि के रूप में भी याद किया जाता है।

अज्ञेय के पूर्वज पंजाब कें निवासी थे, जो भणोत सारस्वत ब्राह्मण थे। अज्ञेय का जन्म फाल्गुन शुक्ल सप्तमी संवत् 1967 अर्थात् 7 मार्च 1911 ई. को उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद के कसिया नामक स्थान में एक पुरातत्व खुदाई शिविर में हुआ था। अज्ञेय के बचपन का नाम सच्चा था। इनके पिता हीरानंद शास्त्री भारत के पुरातत्व विभाग में एक उच्च अधिकारी थे। अज्ञेय की शैशवावस्था के पाँच वर्ष लखनऊ में बीते। पिता के बार-बार स्थानान्तरण के कारण अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पिता की देख-रेख में संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी, बांग्ला एवं साहित्य के अध्ययन के साथ घर पर ही हुई।

सन् 1925 ई. में पंजाब से हाईस्कूल की परीक्षा व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण कर लेने के पश्चात् क्रिश्चियन कॉलेज मद्रास में प्रवेश लिया और सन् 1927 ई. में वहाँ से इण्टरमीडिएट की परीक्षा विज्ञान से पास किया। बी.एस-सी. करने के लिए वह लाहौर चले गए और वहाँ फारमैन कॉलेज से 1929 ई. में बी.एस-सी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके बाद एम.ए. अंग्रेजी में प्रथम वर्ष पास किया किन्तु एम.ए. फाइनल की परीक्षा से पहले ही ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राजनीतिक आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के अपराध में गिरफ्तार हुए और जेल जाना पड़ा।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय के संस्कारों में भारत का स्वाधीनता आंदोलन, भारत का सांस्कृतिक नवजागरण रचा-बसा था। वह तिलक की क्रांतिकारी विचारधारा के प्रभाव में आए। क्रांतिकारी जीवन का श्रीगणेश अज्ञेय ने लाहौर में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन पार्टी से जुड़े चंद्रशेखर